PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 5, ISSUE 2

पर्यटन का पर्यावरण पर प्रभाव

डॉ0 राजेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर भूगोल
मेजर एस0 डी0 सिंह कालेज, मोहम्मदाबाद
फर्रूखाबाद । उत्तर प्रदेश भारत

प्रस्तावना :–

पर्यटन का पर्यावरण पर गहन प्रभाव पड़ता है क्योंकि पर्यटन और पर्यावरण दोनों घनिष्ठ रुप से अन्तःसम्बन्धित होते हैं। पर्यटन की सुन्दरता प्राकृतिक सुन्दरता पर निर्भर होती है औश्र वर्तमान समय में पर्यटन ही पर्यटन को हानि पहुॅचा रहा है। पर्यटन विकास के पैकेज के विकास के समय पर्यावरण का ध्यान नहीं रखा जाता है। नीचे दिये गये मॉडल (प्रतिरुप) द्वारा पर्यटन के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव निम्नलिखित हैं – विभिन्न प्रकार के पर्यटन का पर्यावरण पर विभिन्न प्रकार से प्रभाव पड़ता है। इस सन्दर्भ में पर्यटकों के लिये राष्ट्रीय उद्यानों और वन परिक्षेत्रों के विकास के अनुभव का और पर्यटन का उन पर प्रभाव का वर्णन करना आवश्यक है।

राष्ट्रीय उद्यानों, अभयारण्यों और आरक्षित वन क्षेत्रों में पर्यटन का वन्य जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है जिससे पशु जीवन तो बाधित होता है किन्तु इस प्रकार के क्षेत्रों के संरक्षण को प्रोत्साहन मिलता है। किन्तु अनियोजित पर्यटन से उस क्षेत्र की वहन क्षमता पर तीव्र दबाव पड़ता है जिससे वन्य जीवन काफी प्रभावित होता है। पर्यटन वन संरक्षण में सहायता भी पहुँचाता है क्योंकि जब सामान्य व्यक्ति वन्य जीवन के प्रति सजग हो जाता है और वन संरक्षण को जीवन हेतु अपरिहार्य समझकर उसकी सुरक्षा अपना कर्तव्य समझने लगता है तो वह प्रकृति की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने लगता है।

भाब्द कुँजी :– पर्यटन, राश्ट्रीय उद्यान, अपरिहार्य, आकर्शण, पर्यटक, परिपूर्ण आदि।

परिचय :–

पर्यटन विकास के पैकेज के विकास के समय पर्यावरण का ध्यान नहीं रखा जाता है। नीचे दिये गये मॉडल (प्रतिरुप) द्वारा पर्यटन के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव निम्नलिखित हैं – विभिन्न प्रकार के पर्यटन का पर्यावरण पर विभिन्न प्रकार से प्रभाव पड़ता है। इस सन्दर्भ में पर्यटकों के लिये राष्ट्रीय उद्यानों और वन परिक्षेत्रों के विकास के अनुभव का और पर्यटन का उन पर प्रभाव का वर्णन करना आवश्यक है।

राष्ट्रीय उद्यानों, अभयारण्यों और आरक्षित वन क्षेत्रों में पर्यटन का वन्य जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है जिससे पशु जीवन तो बाधित होता है किन्तु इस प्रकार के क्षेत्रों के संरक्षण को प्रोत्साहन मिलता है। किन्तु अनियोजित पर्यटन से उस क्षेत्र की वहन क्षमता पर तीव्र दबाव पड़ता है जिससे वन्य जीवन काफी प्रभावित होता है। पर्यटन वन संरक्षण में सहायता भी पहुँचाता है क्योंकि जब सामान्य व्यक्ति वन्य जीवन के प्रति सजग हो जाता है और वन संरक्षण को जीवन हेतु अपरिहार्य समझकर उसकी सुरक्षा अपना कर्तव्य समझने लगता है तो वह प्रकृति की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने लगता है। ध्यातव्य है कि पर्यटन संरक्षित क्षेत्रों का सक्रिय प्रवर्तक है। सामान्य रुप से माना जाता है कि अभयारण्यों को पर्यटन आकर्षण का केन्द्र बनाने से इसके संरक्षण में सहायता मिलती है। चूंकि कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान एक ऐसा स्थल है जहां आवश्यकता से अधिक पर्यटकों की भीड़ रहती है।

कार्बेट नेशनल पार्क का सम्पूर्ण क्षेत्रफल 520 वर्ग किलोमीटर है प्राकृतिक पर्यावरण से परिपूर्ण रामगंगा नदी केक दोनो ओर विस्तृत इस भूखण्ड पर पर्यटकों का घनत्व प्रतिवर्ष बढ़ता ही जा रहा है। जो सारणी क्रमांक 9.1 में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 9.1

कार्बेट नेशनल पार्क : पर्यटक घनत्व (प्रति वर्ग कि0मी0)

क्र0	वर्ष	पर्यटक संख्या	पर्यटक घनत्व	वृद्धि प्रतिशत में
1	1992–93	27963	53.78	–
2	1993–94	43486	83.63	0.56
3	1994–95	42230	81.21	–2.89

4	1995–96	46698	89.80	10.58
5	1996–97	49312	94.83	5.60
6	1997–98	49395	94.99	0.17
7	1998–99	49471	95.14	0.16
8	1999–2000	54102	104.04	9.35
9	2001–01	60888	117.09	12.54
10	2001–02	72910	140.21	19.75
11	2002–03	84310	162.15	15.65
12	2003–04	97275	187.07	15.37
13	2004–05	112298	215.96	15.44
14	2005–06	130043	250.08	15.80
15	2006–07	139047	267.40	6.93

उल्लिखित सारणी से स्पष्ट है कि जहॉ वर्ष 1992–93 में राष्ट्रीय उद्यान के प्रतिवर्ग किलोमीटर पर 53.78 व्यक्तियों का दबाव रहा वही क्रमशः बढ़ता हुआ 5 वर्षो में 94.99 व्यक्ति और वर्ष 1999–2000 में बढ़कर 104.04 व्यक्ति हो गया।

प्रतिवर्ष वृद्धि का प्रतिशत 9.35 रहा। वर्ष 2001–02 में बढ़कर 140.21 (वृद्धि दर 19. 75 प्रतिशत) व्यक्ति हो गया। तत्पश्चात् लगभग 15 प्रतिशत की दर से बढ़ता हुआ वर्ष 2005–06 में प्रतिवर्ग कि0मी0 250.08 व्यक्ति हो गया। उल्लिखित समंक स्पष्ट रुप से बता रहा है कि वन्य पर्यावरण व जीवजन्तुओं पर मानव की बढ़ती पर्यटक रुपी जनसंख्या उसे विकृत व बुरी तरह से प्रभावित कर रही है। प्रतिवर्ष आने वाले पर्यटकों की संख्या बढ़ती जा रही है।

पर्यटकों की तेजी से बढ़ती संख्या के अनुरुप न तो आवागमन के साधनों में वृद्धि हुई है और न ही सड़कों का विकास हुआ है। पर्यटकों को एक स्थान विशेष तक ही जाने

की छूट है। तीव्र गति से चलती गाड़ियों, सड़कों पर गाड़ियों के चलने और रात्रि में गाड़ियों के चलने के कारण वन्य जीवों को हानि पहुंचती है तथा उनके स्वभाव में भी परिवर्तन आता है। उद्यानों में बने आवासीय स्थलों और कैम्प स्थलों के आस–पास अनियंत्रित और अनियोजित ढंग से पानी बहाने और खाद्य सामग्री पैकिंग डिब्बे, बॉक्स तथा अन्य सम्बन्धित सामग्री फेंकने से जानवर इनकी ओर आकृष्ठ होते हैं और उनकी जीवन पद्धति बाधित होती है। इन स्थलों पर सिगरेट के खाली पैकेट, शराब की बोतलें, कार्टून, पोलीथीन बैग और सम्बन्धित खाद्य पदार्थ बहुतायत में मिलते हैं।

वन्य जीवों से निर्मित वस्तुओं की मांग वर्तमान में बहुत बढ़ रही है। मांग में वृद्धि होने से व्यापार के लिये पशुओं को बड़े पैमान पर पकड़ा जा रहा है और उन्हें मारा जा रहा है। कलाकृतियों के केन्द्रों और दुकानों पर खुले रुप में हाथी दांत से निर्मित कई वस्तुऐ, जेबरा की खाल, हिरण के सींग और सिर, शेर के पंजे का हार, बन्दर की खाल का पायदान, शुतुमुर्ग के पैर का लैंप, चिंकारा के खुर की चाभी का छल्ला, घड़ियाल की चमड़ी और कई पशुओं और पक्षियों की खालों की वस्तुएं तो बिकती ही है साथ ही इन जानवरों की खालें तक धड़ल्ले से बिक रही है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् परिवहन एवं संचार के क्षेत्रों में उत्क्रमिक विकास के फलस्वरुप एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने एवं वहॉ के ऐतिहासिक प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक स्थलों को पर्यटकों द्वारा स्व्यं देखने की गति में वृद्धि हो रही है तथा राष्ट्रीय एकता एवं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव को प्रबल बनाने में पर्यटन के योगदान को स्वीकारा जाने लगा है। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व में प्रतिवर्ष चालीस करोड़ से भी अधिक पर्यटक यात्रा कर रहे हैं जिससे पर्यटन के क्षेत्र में करोड़ों लोग प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रुप से कार्यरत होकर प्रतिवर्ष 300 अरब डालर से भी अधिक का व्यापार कर रहे हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में कई दशकों तक इस ओर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया किन्तु सातवीं पंचवर्षीय योजना में पर्यटन के महत्व को स्वीकारा गया और पर्यटन क्षेत्र के लिये कुछ उद्देश्य निर्धारित किये गये जिनमें से प्रमुख निम्नवत् है –

1. पर्यटन विकास में तेजी लाना

2. पर्यटन को उद्योग के रुप में स्थापित करना

3. सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्र में पर्यटन को स्थापित करना ताकि पर्यटन के विकास में निजी क्षेत्र में निवेश को उत्साहित किया जाये साथ ही सार्वजनिक क्षेत्र के निवेश का प्रमुख उद्देश्य सहयोगी आधारभूत सुविधाओं के विकास पर केन्द्रित हो।

4. स्थानीय हस्तशिल्प और अन्य सृजनात्मक कला को प्रोत्साहन देने हेतु पर्यटन का उपयोग करना।

5. राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना।

पर्यटन उद्योग के तहत्व को देखते हुये सातवीं पंचवर्षीय योजना के तहत, राष्ट्रीय विकास परिषद ने जुलाई 1984 में इसे उद्योग का दर्जा प्रदान किया गया। पर्यटन केन्द्र आज आवश्यकतानुसार परिस्थितिकी विकास (EcoDevelopment) एवं संविकास (Susinable Development) की अवधारणा के अनुकूल राजगार मूलक एवं भारतीय सम्मृद्धि के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते है।

पर्यटन आय प्राप्ति और नियोजन के अवसर उत्पन्न करता है। यह एक ऐसा बहुआयामी उद्योग है जिसमें राज्य का प्रत्येक अंग भाग लेता है, जो दो एवं प्रदेश के पर्यटको के विशाल जनसमूह को आकर्षित करना है, एवं उसे समृद्ध बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। पर्यटन का मुख्य आर्थिक महत्व यह है कि पर्यटक अपने निवास स्थान में कमाया गया धन का दूसरे स्थान में खर्च करता है जहॉ वह पर्यटन हेतु जाता है। उल्लेखनीय यह है कि खर्च किये गये धन के परिणामस्वरुप उस स्थल के लोगों की क्रय शक्ति में वृद्धि एवं पर्यटन केन्द्र की आय को उससे अधिक मात्रा में बढ़ा देती है।

पर्यटकों द्वारा खर्च किया गा धन जब नये हाथ से होकर गुजरता है तो हर बार नई आमदनी का रुप धारण कर लेता है। इस प्रकार लगातार पर्यटक व्यय के इस सिलसिले को अर्थशास्त्र में गुणांक या प्रवर्धक प्रभाव (Multiplayer Efhect) कहा जाता है। धन के व्यय होने अथवा परिवर्तन की यह क्रिया (Conversion) जितनी अधिक बार होगी पर्यटन केन्द्र की अर्थव्यवस्था पर इसका उतना ही अधिक अनुकूल प्रभाव पड़ेगा।

पर्यटन का पर्यावरणीय प्रभाव :–

सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र कुमायूँ मण्डल में पर्यावरण पर्यटन की अथाह संभावनायें विद्यमान है। क्षेत्र विशेष के पर्यावरण पर्यटन का यह सर्वमान्य सत्य है कि स्थानीय विद्यमान है। क्षेत्र विशेष के पर्यावरण पर्यटन का यह सर्वमान्य सत्य है कि स्थानीय लोगों की आय बढ़ाने में इसका महत्वपूर्ण स्थान रहता है, जबकि स्थानीय लोगो द्वारा वातावरण के संरक्षण देखभाल एवं पुननिर्माण द्वारा ही यह क्रिया सम्भव हो सकती है। साधरणतः हम स्वयं को जिन परिस्थितियों से घिरा हुआ पाते है, उनमें कुछ दशायें प्राकृतिक है जैसे भूमि, जल वायु, तापमान, वन खनिज–पदार्थ, मौसम, आदि और कुछ दशायें सामाजिक है जैसे

– धर्म, नैतिकता, आदर्श–प्रथायें, परम्परायें, लोकाचार आदि इन सभी सामाजिक, सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक दशाओं की सम्पूर्णता को ही पर्यटकीय पर्यावरण कहते है।

सामान्य रुप से यह कहना है कि पर्यटन का पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव होता है, पूर्णतः उचित नही होगा। ऐसा कहा गया है कि यह उद्योग चिमनी रहित है और यह भी कहा जा सकता है कि यह पर्यावरण को सुरक्षा प्रदान करता है। किसी भी पर्यटन स्थल के प्राकृतिक संसाधनों की उन्नति पर्यटन द्वारा होती है और निश्चिय ही पर्यटन उनके लिये कोई खतरा पैदा नही करता। प्राकृतिक दृश्य तथा स्थानीय संस्कृति पर्यटकों के रुचि के तत्व होते है। यदि पर्यटन की उन्नति की जाये तो पर्यावरण के लिये यह उतना खतरा नही करेगा, जितना कि आर्थिक एवं औद्यौगिक विकास से वातावरण प्रदूषित होता है। यदि पर्यटन अथवा पर्यटकों का उपयोग उनकी रुचि इत्यादि को ध्यान में रखकर किया जाये तो पर्यटन वातावरण के सुधार तथा सुन्दरीकरण का एक प्रभावशाली उपकरण हो सकता है।

सामान्यतः पर्यटक पर्यावरण की ओर प्रभावित होकर ही पर्यटन करता है। परन्तु आज दिन प्रतिदिन पर्यावरण ह्रास होता जा रहा है। अतः हम यह भी कह सकते हैं कि पर्यटन को नष्ट कर रहा है जैसे –

1. जल प्रदूषण :–

पर्यटन को प्रमुख केन्द्र जलाशय जहॉ लाखों–करोड़ों की संख्या में भक्त एवं श्रृद्धालु स्थान के लिये आते है जहॉ वे मल–मूल एवं भोजन आदि की जूठन, पत्तल एवं इसके अतिरिक्त मृतकों की राख का विसर्जन कर जल को प्रदूषित कर रहे हैं।

2. वायु एवं ध्वनि प्रदूषण :–

पर्यटन स्थल पर भ्रमण में वृद्वि के साथ ही साथ होने वाली वाहनों में वृद्धि ध्वनि प्रदूषण का प्रमुख कारण है, जिससे प्राकृतिक वनस्पति, पेड़–पौधों पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त प्रदूषण से कुप्रभावित होकर ताज के सफेद पत्थरों पर पीलापन देखा गया है।

3. हरियाली ह्रास :–

पर्यटन स्थलों के नर्माण के लिये पेड़ों की कटाई, उद्यानों और वनों में आग लगाना, उद्यानों व वनों में गाड़ियों का आना–जाना, फूल–पौधों को तोड़ना आदि। जिससे पर्यावरण का नाश होता है एवं पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

REFERECES

1. Chib, Som, N., "Perspective on Tourism in India" (New Delhi Publication Division, Ministry of Information Broadcasting) (1999) p. 27
2. जय प्रकाश झा, बिना चिमनी एवं धुयें का उद्योग, पर्यटन योजना 31 मई 1993 पृ0 16
3. ब्रज किशोर मानव, भारत में पर्यटन की बढ़ती सम्भावनायें, योजना 16–31 मार्च, (1991) पृ0 27
4. Howard Mech, Hotel and Restaurant Guide India" 96 Deptt. of Tourism, Government of India (1995) p. 8
5. अभय कुमार, मुद्रा स्मीति एवं भुगतान संतुलन की समस्या योजना 28 फरवरी 1993 पृ0 14
6. शिवेन्द्र नारायण सिंह, भारत का आर्थिक संकट और अवमूल्यन योजना 31 अक्टूबर (1991) पृ0 7